Today's Poem – 22.05-2014

मैं आत्मा हूँ शरीर नहीं, यह है पहला पाठ

इसे रखना है हमें सदा याद

ज्ञान की बातें बड़ी ख़ुशी-ख़ुशी से सुनाओ

पहले ज्ञान का मनन-चिन्तन करो फिर किसी को सुनाओ

ज्ञान की आपस में रूहरिहान कर फिर दूसरों को समझाना है

सुस्ती वा आलस्य को छोड़ देना है

देही-अभिमानी बन बड़े हुल्लास से बाप को याद है करना

हम बाप के पास आये हैं कौड़ी से हीरा बनने सदा इसी नशे में है रहना

माया से निर्भय बनो

आपसी सम्बन्धों में निर्माण बनो

मेरा बाबा

ॐ शान्ति !!!